International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

महात्मा गांधी के विचारों पर लियो टाल्सटाय का प्रभाव

सुमन
इतिहास प्राध्यापिका
आरोही मॉडल विद्यालय डुल्ट
फतेहाबाद

शोधसार :–गांधी जी ने वर्तमान पाश्चात्य, यूरोपीय सभ्यता, संस्कृति तथा विचारधारा को बडे करीब से देखा, समझा और उसका सत्य, अहिंसा, नैतिकता एवं न्याय के आधारभूत मापदण्डों से परीक्षण किया । जहां उन्होंने पश्चिमी सभ्यता, संस्कृति, संगठनों व चिारधारा की उन सब बातों की, जो उनकी अपनी कसौटियों पर खरी उतरी, बडी उदारता से प्रशंसा की उन्होंने उन्हें अपनी विचारधारा और आचरण का एक अमिट अंग बना लिया वहीं दूसरी ओर उन्होंने उनकी कमियों, त्रुटियों व दोषों की कटुतम आलोचना भी की जो उनकी पुस्तकों व लेखों में विशेषकर उनकी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में देखने पढने को मिलती है ।

प्रस्तावना :– महात्मा गांधी जी पश्चिमी आदर्शवादी विचारक टी0एच0ग्रीन, समझौतावादी जान लॉक तथा जान स्टुअर्ट मिल, अल्पमतवादी जान रस्किन, अमेरिकी विचारक हेनरी डेविड थोरो, कार्ल मार्क्स, लेनिन अपने समकालीन विचारक हैरल्ड लास्की, रूसी विचारक लियो टालस्टाय और इन सब विचारकों के प्रेरणा के स्रोत सुकरात, प्लेटो तथा अरस्तु के वे विचार जो उनकी अपनी सत्य, अहिंसा, नैतिकता तथा औचित्यपूर्णता की कसौटियों पर खरे उतरे उनको उन्होंने बडी उदारता से अपनी विचारधारा तथा कार्यक्रमों का अभिन्न अंग बना लिया [1]।

इन सभी विद्वानों से गांधीजी किसी न किसी रूप में प्रभावित थे । उनकी विचारधारा पर इनका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । इनमें से गांधीजी पर रूस के महान विचारक लियो टाल्सटाय का सम्भवतः सबसे अधिक प्रभाव था । रूसी साहित्य में टाल्सटाय का विशेष महत्व है । थारो तथा रस्किन की भांति वे भी मूलतः धार्मिक एवं नैतिक विचारक थे और भौतिक उन्नति की अपेक्षा मानव के नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान को अधिक महत्व देते थे [2]।

टाल्सटाय का जन्म 1828 ई0 में रूस में हुआ था । उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने का प्रयत्न अवश्य किया था पर उसमें उनका मन नहीं लगा । उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन पढने–लिखने में लगाया । वे विश्व के महान साहित्यकार हैं । उनकी मुख्य रचनाएं– वार एण्ड पीस (युद्ध और शान्ति), अन्ना केरेनीना, सेक्स एण्ड कल्चर (सेक्स और साहित्य), हार्मनी

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

ऑफ द गास्पेल्स (धर्मग्रन्थों की एकता), द किंग्डम ऑफ द गॉड इज विद इन यू (ईश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है ।)

टाल्सटाय के विचारो की अभिव्यक्ति गांधी जी के जीवन में परिलक्षित हुई । टाल्सटाय ने जिन प्रमुख सिद्धान्तों के प्रतिपादन में अपने जीवन की आहुति दी उनसे गांधीजी को अपने विचार–प्रणाली के निर्धारण तथा यथासम्भव उसे कार्यरूप देने में सबल समर्थन प्राप्त हुआ जिसमें उन्हें एक निश्चित अवधारणा को निर्धारित करने में सहायता मिली [3]।

गांधीजी ने टाल्सटाय की पुस्तक ' द किंग्डम ऑफ द गॉड इज विद इन यू' का 1904 में अध्ययन किया था । इस पुस्तक का गांधीजी पर गहरा प्रभाव पडा था । इस समय गांधीजी 35 वर्ष के थे । टाल्सटाय ने इस ग्रन्थ में ईसाई धर्म के सभी सम्प्रदायों की निन्दा की थी [4]।

उनका कहना था कि ईसाई धर्माधिकारी ईसा की वास्तविक शिक्षाओं को भूल चुके हैं । वे अपने जीवन में ईसा के उपदेशों का पालन नहीं करते । उनकी कोशिश सिर्फ यह रहती है कि जनता पर अपना असर कायम रखा जाए ।

फ्रांसीसी मनीषी रोमां रोला ने गांधीजी पर टाल्सटाय के प्रभावों का वर्णन करते हुए लिखा है कि "तरूण भारतीय गांधी ने मृत्यु का आलिंगन कर रहे टाल्सटाय के हाथ से वह दिव्य ज्योति संभाल ली जिसे वृद्ध रूसी देवदूत ने अपने हृदय में प्रदीप्त किया था । उस दिव्य ज्योति को गांधीजी ने अपने प्यार और दर्द से पोषित किया और एक मशाल का रूप दे दिया । उससे भारत आलोकित हो उठा और उस आलोक के प्रतिबिम्ब ने भूमण्डल को जगमगा दिया [5]।

गांधीजी प्रचलित अर्थों में साहित्यकार नहीं थे । जिस समय वे टाल्सटाय की ओर आकर्षित हुए उस समय तक भारतीय राष्टीय मुक्ति आन्दोलन के कर्णधार भी नहीं बने थे फिर भी यह आश्चर्यजनक सत्य है कि दक्षिण अफ्रीका में चल रहे भारतीयों के मुक्ति संघर्ष के दौरान, आत्मिक संकट में पडे हुए बैरिस्टर गांधी ने प्रेरणा के लिए इस रूसी चिन्तक की ओर देखा [6]।

गांधीजी ने टाल्सटाय की पुस्तकों को ही नहीं पढा, उन्होंने टाल्सटाय से पत्र व्यवहार भी किया । यह टाल्सटाय के अन्तिम दिनों की बात है [7]।

सन् 1905 में टाल्सटाय की चार कहानियों का अनुवाद करके 'इण्डियन ओपिनियन' में प्रकाशित किया था । विशेष रूप से ईश्वर का राज्य तुम्हारे अंदर है' कहानी ने उन्हें झकझौर दिया ।

18 अगस्त 1909 को अपने एक रिश्तेदार की गिरफतारी पर टाल्सटाय ने जो मार्मिक वक्तव्य दिया था उसे पढकर गांधीजी अत्यंत प्रसन्न हुए । उन्होंने कहा, "जो व्यक्ति इस प्रकार लिख सकता है और उसके अनुसार व्यवहार कर सकता था, उसने तो जगत जीत लिया है, दुःख पर विजय प्राप्त कर ली है और अपना जीवन सार्थक बना लिया है [8]।" इस पृष्ठभूमि में गांधीजी ने टाल्सटाय को पहला पत्र 1 अक्टूबर 1909 को लिखा । तब वे दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरूद्ध संघर्ष कर रहे थे । पत्र लिखने के समय वे लंदन आये हुए थे । वे चाहते थे कि बरतानिया की सरकार भारतीयों की ओर से दक्षिण अफ्रीका की सरकार पर दबाव डाले ।

गांधीजी ने इस चिट्ठी में दक्षिण अफ्रीका में काम करने वाले तेरह हजार भारतीयों की दयनीय दशा का वर्णन करते हुए बताया कि वे कैसे रंगभेद के विरूद्ध संघर्ष कर रहे हैं । उन पर नाना प्रकार की पाबंदियां लगी हुई हैं । उसका उद्देश्यय उनके साथ भेदभावपूर्ण तथा अपमानजनक व्यवहार करना है परन्तु उन्होंने काले कानून के आगे सिर झुकाने की बजाय जेल जाना पसंद किया । सरकार ने उन्हें बर्बाद, बेरोजगार और बेघर कर दिया परन्तु इन लोगों ने हिंसा या बल प्रयोग का जरा भी आश्रय लिए बिना ये लोग अधिकारियों के आदेश स्वीकार करने से इनकार कर रहे हैं । अंत में लिखा, "मैं आपके निकट नितांत अपरिचित हूं फिर भी मैंने सत्य के हित को दृष्टिगत करके आपको यह पत्र लिखने की धृष्टता की है और उन समस्याओं के बारे में आपका मार्गदर्शन चाहा, जिन्हें हल करना आपने अपने जीवन का ध्येय माना है [9]।

एक अज्ञात व्यक्ति से ऐसी चिट्ठी पाकर टाल्सटाय का उत्सुक हो जाना स्वाभाविक था । अनाक्रामक प्रतिशोध और सत्याग्रह–संघर्ष के तरीक ऐसे थे जिनकी वे निरन्तर वकालत करते आ रहे थे [10]।

टाल्सटाय ने अपनी डायरी से 24 सितम्बर 1909 के विवरण में लिखा था "ट्रांसवाल के हिन्दू भारतीय) सवे मनहोरी पत्र प्राप्त हुआ । चार दिन बाद टाल्सटाय ने अपने एक मित्र ब्लादिमीर जी शर्टकाफ को पत्र लिखा जिसमें लिखा था ' ट्रांसवाल के हिन्दू के पत्र ने मेरे हृदय को छुआ है [11]।'

यास्नाया पोल्याना से 7 अक्टूबर (20 अक्टूबर 1909 के पत्र में टाल्सटाय ने रूसी भाषा में गांधी जी को उत्तर भेजा । टाल्सटाय ने लिखा था "मुझे अभी आपका बडा दिलचस्प पत्र मिला जिसे पढकर मुझे बहुत आनन्द हुआ । ट्रांसवाल के हमारे भाईयों तथा सहकर्मियों की ईश्वर सहायता करे । कठोरता के विरूद्ध कोमलता का और अहंकार तथा हिंसा के विरूद्ध

विनय तथा प्रेम का यह संघर्ष हमारे यहां हर साल अपनी अधिकारिक छाप डाल रहा है । मैं बुधुत्व की भावना से आपका अभिवादन करता हूं और आपसे सम्पर्क होने में मुझे हर्ष है [12]।

गांधी को टाल्सटाय का यह पत्र उस दिन मिला जिस दिन वे बरतानिया की सरकार से निरश हो चुके थे । उनसे भारतीय प्रवासियों के लिए दक्षिण अफ्रीका की सरकार से अपने संबंध बिगाडने से स्पष्ट इनकार कर दिया था । तब 10 नवम्बर 1909 को टाल्सटाय को दूसरा पत्र लिखा [13]।

गांधीजी ने इस पत्र के साथ ब्रिटिश पादरी जोसेफ आई0 डोथ की लिखी पुस्तक "मोहनदास करमचन्द गांधी, दक्षिण अफ्रीका में देशभक्त भी भेजो। इस धृष्टता के लिए क्षमा मांगते हुए लिखा, 'यह पुस्तक मेरे जीवन और संघर्ष पर प्रकाश डालती है जिसके लिए मैंने अपना जीवन अर्पित कर दिया है [14]।'

पांच महीने बाद गांधीजी ने टाल्सटाय को तीसरा पत्र लिखा और उसके साथ अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' का अंग्रेजी अनुवाद भी भेजा । इस प्रार्थना के साथ कि टाल्सटाय उसे पढे और अपने विचार भी रखें [15]।

टाल्सटाय ने 25 अप्रैल (8 मई) 1910 को योस्नामा पोल्माना से पत्र भेजा । उन्होंने गांधीजी की पुस्तक होमरूल बहुत दिलचस्पी के साथ पढी तथा उनके निष्क्रिय प्रतिरोध को केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि सारी मानवता के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया [16]। गांधीजी बार–बार आश्रम के विद्यार्थियों से टाल्सटाय की पुस्तकें पढने का आग्रह करते थे और स्वयं जेल में उनके ग्रन्थों का अध्ययन करते थे । उनका मानना था कि टाल्सटाय की रचनाएं बहुत सरल और सरस हैं । किसी भी धर्म को मानने वाले उन्हें पढकर उनसे लाभ उठा सकते हैं । इसके अतिरिक्त वे उन व्यक्तियों में से थे जो जैसा कहते थे वैसा करते भी थे । इसलिए वे जो कुछ कहते या लिखते, उस पर हम साधारणतः ज्यादा भरोसा कर सकते हैं [17]।

गांधी टाल्सटाय के इस कथन से अत्यंत प्रभावित हुए थे कि हिंसक युद्ध की तरह अहिंसक युद्ध से भी योद्धाओं का समुचित शिक्षण व प्रशिक्षण होना चाहिए । इसी बात को ध्यान में रखते हुए गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका फिनिक्स तथा टाल्सटाय आश्रमों तथा भारत में साबरमती तथा सत्याग्रह–सहयोगियों का समुचित शिक्षण प्रशिक्षण किया था [18]।

गांधी जी टाल्सटाय के इस मत से भी सहमत थे कि वास्तविक स्वराज वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को शासित करे । जब ऐसा संभव होगा, तब शासन और शासित का भेद नहीं रहेगा । जब प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को शासित नहीं करेगा, स्वराज की धारणा अपूर्ण रहेगी [19]।

स्वतंत्र विचारशैली और सादा जीवन उच्च विचार से परिपूरित टाल्सटाय का जीवन दर्शन भी गांधी जी के लिए प्रेरणाप्रद रहा । गांधी जी के शब्दों में, "उनके जीवन में से मैं अपने लिए दो बातें भारी समझता हूं । वह जैसा कहते हैं वैसा ही करने वाले पुरूष थे । उनकी सादगी अद्भुत थी । उन्होंने सत्य को जैसा माना वैसा ही पालने का उग्र प्रयत्न किया । सत्य को छिपाने या कमजोर करने का प्रयत्न नहीं किया । अहिंसा का शूक्ष्मदर्शन जितना टाल्सटाय ने किया था, उतना प्रयत्न करने वाला आज हिन्दुस्तान में नहीं है । उन्होंने जो वस्तु मान ली उसका पालन करने में भारी प्रयत्न किया और उससे कभी डिगे तक नहीं ।

टाल्सटाय की जन्म शताब्दी के अवसर पर गांधी जी ने सत्याग्रह आश्रम में जो लम्बा व्याख्यान (हिन्दी नवजीवन 20 सितम्बर 1928) दिया था उसमें उन्होंने अपना दिल खोलकर रख दिया । समय–समय पर अब तक जो वे कहते आ रहे थे उस सब का सार इसमे समाहित था । उसके कुछ अंश इन दो महाप्राण व्यक्तियों के संबंधों की गहराई को समझने में सहायक हो सकते हैं । तीन पुरूषों ने मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है । उनमें पहला स्थान कवि रामचन्द्र को देता हूं दूसरा टाल्सटाय को और तीसरा रस्किन को देता हूं [20]।

गांधीजी का दृष्टिकोण बडा व्यापक था । जीवन के विकास व मानवता के कल्याण के हर विचार को उन्होंने जहां से भी मिला सहजता से स्वीकार किया और सर्वोत्तम जीवन दर्शन को अभिव्यक्त किया [21]।

गांधी जी न केवल परम्परा तथा आधुनिकता बल्कि पूर्व तथा पश्चिम के बीच एक ऐसे सेतु के रूप में उभरे जिस पर चलकर न केवल दक्षिण अफ्रीका के अश्वेतों ने रंगभेद के असत्य व अन्याय से तात्कालिक मुक्ति प्राप्त की बल्कि भारतीवासियों ने भी सामन्तवादी शासन व्यवस्थाओं के असत्य तथा अन्याय को अहिंसा की राजनीति का सहारा लेकर सदा के लिए धराशायी कर दिया । वास्तव में गांधी जी तो एक ऐसे विशाल समुन्द्र की तरह थे जिसमें विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों, धर्मों, व्यवस्थाओं, परम्पराओं तथा गतिविधियों पर पडा पश्चिमी का प्रभाव न केवल मूलरूप से सकारात्मक तथा रचनात्मक था बल्कि समन्वयात्मक भी था ।

संदर्भ सूची–

1. डॉ0 रामरतन शोभिकाः–महात्मा गांधी की राजनैतिक अवधारणायें, पृ0– 26
2. डॉ0 बेदप्रकाश शर्मा : महात्मा गांधी नैतिक दर्शन की रूपरेखा, पृ0– 33
3. डॉ0 नागेश्वर प्रसाद :गांधी का अराजकतावाद, पृ0– 45
4. विश्वप्रकाश गुप्त तथा मोहिनी : महात्मा गांधी व्यक्ति और विचार, पृ0– 100
5. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 125
6. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 125

7. विश्वप्रकाश गुप्त तथा मोहिनी : महात्मा गांधी व्यक्ति और विचार, पृ0– 101
8. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 126
9. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 127
10. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 127
11. लुई फिशर : गांधी की कहानी, पृ0– 37,38
12. लुई फिशर : गांधी की कहानी, पृ0– 38
13. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 127–128
14. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 128
15. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 128
16. लुई फिशर : गांधी की कहानी, पृ0– 39
17. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 129–130
18. पूनम गर्ग : गांधी की विचारधारा पर पश्चिमी प्रभाव, पृ0– 101
19. डॉ0 अखिलेश प्रसाद दुबे : गांधी दर्शन की रूपरेखा, पृ0– 12
20. विष्णु प्रभाकर :– गांधी, समय, समाज और संस्कृति, पृ0– 130
21. रामलाल विवके : महात्मा गांधी जीवन–दर्शन, पृ0– 89